"बापदादा की एकस्ट्रा मदद, सफलता के वरदान और दृढ़ता द्वारा विशेष कमजोरी तथा व्यर्थ को समाप्त कर सम्पूर्ण पवित्र, सन्तुष्टमणी, तीव्र पुरुषार्थी और निर्विघ्न बन साथियों को भी निर्विघ्न बनाने के साथ-साथ सबको परमात्म सन्देश दो"

(होमवर्क :- *सीजन 2013-14)*

- अभी बापदादा यही चाहते हैं *स्व स्थिति और सेवा की स्थिति दोनों में तीव्र हो।* बापदादा यही चाहते हैं कि हर बच्चा सदा अचल-अडोल आगे से आगे बढ़ता जाए। दुनिया के वायुमण्डल प्रमाण अभी बच्चों को मैजारिटी *पावरफुल सकाश से वायुमण्डल को परिवर्तन करने की मन्सा शक्ति की इस समय आवश्यकता है।* मन्सा शक्ति को और पावरफुल कर मन्सा शक्ति द्वारा आजकल के प्रभाव को परिवर्तन करने पर और ज्यादा अटेन्शन देना आवश्यक है। आजकल के हिसाब से सुनने-सुनाने की शक्ति के बजाए *वृत्ति द्वारा वृत्तियां बदलने की आवश्यकता है*। बापदादा ने देखा वृत्तियां बदलने की शक्ति को और ज्यादा कार्य में लगाना है। यह सुनने-सुनाने से नहीं होगा लेकिन *अपने मन की शुभ कामना - मनुष्यों की वृत्ति को, दृष्टि को, कृति को परिवर्तन कर सकती है।*
- अभी स्वराज्य अधिकारी बनने की विधि और उस विधि को प्रैक्टिकल में अनुभव करना, इस तरफ भी *अटेन्शन* देना है। आज आवश्यकता है मन के शक्ति द्वारा परिवर्तन करने की, मन की वृत्तियों को परिवर्तन करने की। अभी चारों ओर जैसे भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार की बातें चल रही हैं अभी इस वातावरण को मन की शक्ति द्वारा परिवर्तन कर सबके मन में परमात्म याद का उमंग-उत्साह पैदा करो।
- अभी यही हर एक में कोशिश करो कि हर एक के फीचर्स में फ्युचर दिखाई दे। *आशा के दीप दिखाई दें।* अभी हमारा राज्य आया कि आया। यह उमंग-उत्साह हर एक के फीचर्स में दिखाई दे। **(24-10-2013)**
- *कोई भी बात आये, बात बाप को दे दो और आप मुस्कराते रहो।* **(15-11-2013)**
- सदा खुश रहना और खूब खुशी बांटना।
- *सदा सर्व के प्यारे देहभान से न्यारे बाप को दिल में समाते हर कदम उठाना।* **(15-12-2013)**
- बापदादा सभी बच्चों के चेहरे में सदा बेफिक्र बादशाह की झलक देखने चाहते हैं। अटेन्शन है लेकिन आज के विशेष दिन *दिल में कुछ छोड़ना भी है, कुछ धारण करना भी है।* अपने दिल में कोई न कोई विशेष उमंग लाओ और यह उमंग सदा चेक करना कि उमंग, *उमंग* रहा या बदली हुआ? कभी भी बापदादा यही चाहते हैं हर बच्चे के सूरत में, उमंग में सदा कोई न कोई गुण धारण करने का उमंग हो। अगर गुण धारण करेंगे तो अवगुण तो खत्म हो जायेगा ना!
- बापदादा खुश है कि सभी बच्चे कोई न कोई विशेष कमजोरी जो अब तक चाहते नहीं लेकिन आ जाती है; उसी संकल्प को, धारणा को *आज और अभी* के दिन दृढ़ संकल्प द्वारा छोड़ सकते हो? उसके लिए बापदादा विशेष अमृतवेले विशेष मदद देंगे। सुबह अमृतवेले, अमृतवेला करने के बाद संकल्प को चेक करना और दिल से दृढ़ संकल्प करना तो *बापदादा की एकस्ट्रा मदद मिलेगी।* सच्ची दिल से.. ऐसे नहीं देखता हूँ होता है या नहीं होता है! सच्ची दिल से अगर संकल्प करेंगे तो कुछ न कुछ एकस्ट्रा मदद मिलेगी। लेकिन संकल्प के साथ रोज़ उस *कमजोरी को बाप को देके दृढ़ संकल्प करना,* उमंग उल्हास का गुण धारण करके करना ही है। यह दृढ़ संकल्प करके, करके ही दिखाना; करना ही है।
- बापदादा खुश है कि सभी बच्चे मैजॉरिटी चाहते हैं लेकिन चाहना के साथ जो शक्ति चाहिए उस शक्ति के तरफ अटेन्शन कम देते हैं। हो जायेगा... यह बीच में विघ्न डालता है। *दृढ़ता संकल्प के साथ में रखो।*
- अभी आगे चल करके जो समय आने वाला है, उस समय को देख हर एक संकल्प में हर रोज़ *दृढ़ता* चाहिए। रिजल्ट देखो जो संकल्प किया वह कहाँ तक पूरा हुआ? अगर परसेन्टेज भी हल्की हुई...। पहले उमंग बहुत होता है पीछे थोड़ा-थोड़ा ढ़ीला हो जाता है, वह ढ़ीला होने नहीं देना। *करके ही दिखाना है* यह दृढ़ संकल्प करना। मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, *साधारण नहीं हैं।*
- अभी बापदादा का साथ है, ऐसे दिल में सदा साथ रखना। *दिल का दिलाराम है।*
- 'मेरा बाबा'.. जितना बाप में मेरापन लायेंगे, *'मेरा बाबा'.. 'मेरा बाबा'...* उतना सहज याद होती जायेगी क्योंकि मेरी बात कभी भूलती नहीं है। तो बाप को मेरा बनाओ और मेरा भूले नहीं।

➢ बापदादा यही चाहते हैं - सुबह को उठके अपनी शक्ल देखना; *मन की शक्ल,* यह शक्ल नहीं। मन की शक्ल *बाप के दिलपसन्द है?*

➢ सदा वाह वाह। बाप सदा वाह वाह! लगता है ना! तब तो याद करते हो। तो बाप वाह वाह! तो बच्चे भी वाह वाह! सुबह को उठके याद करना मैं कौन सा बच्चा हूँ? वाह वाह! बच्चा हूँ। अच्छा। सदा वाह वाह! रहेंगे ना? इसमें अटेन्शन देना है। तो *वाह वाह शब्द भूलना नहीं।* यह सभा में हाथ उठाया यह भूलना नहीं। मैं कौन? वाह वाह! इज़ी है ना! हूँ ही वाह वाह! तो क्या होगा? खुश। कुछ भी बात हो जाए, आई और गई। *आप क्यों उसको पकड़ लेते हो?* कोई बात ठहरती नहीं है, चली जाती है। आप क्यों पकड़ लेते हो? अगर कभी मूड ऑफ हो ना - वाह वाह! शब्द याद रखना।

➢ बापदादा मिला ना! बाप को भी बच्चों के सिवाए चैन नहीं आता। बापदादा सारे परिवार को अमृतवेले चक्कर लगाते दृष्टि देते हैं। बापदादा को चक्कर लगाने में कितना टाइम चाहिए? क्योंकि बच्चों से प्यार है ना! तो रोज़ अमृतवेले के बाद देखना! बापदादा चक्कर लगायेगा, देखेंगे सभी को। तो क्या दिखाई देंगे? वाह वाह! यह वाह वाह शब्द भूलना नहीं। तो अमृतवेले उठके सदा याद करना - *मैं कौन?* वाह वाह! बच्चे। कोई भी बात हो ना, वह वाह वाह! में समा देना। *बात नहीं रखना, बाप और आप बस...।* **(31-12-2013)**

➢ ब्रह्मा बाप की विशेष शिक्षा है - *स्मृति स्वरूप बापदादा के बनो।* अकेले बाप भी नहीं, अकेले ब्रह्मा बाप भी नहीं। दोनों को याद करो। दोनों की पालना आगे से आगे बढ़ा रही है। तो आज विशेष दिन के हिसाब से विशेष ब्रह्मा बाप की याद सबके दिल में है और फॉलो फादर कर रहे हैं, क्योंकि साकार में आपके समान ब्रह्मा बाप भी रहा। तो ब्रह्मा बाप सदैव कहता है *बापदादा दोनों को फॉलो करो।* जैसे ब्रह्मा बाबा साकार में रहते, साकार में पार्ट बजाते बच्चों से भी और बाहर की सेवा में भी... ऐसे आप भी फॉलो ब्रह्मा बाबा करो। और बापदादा ने देखा बच्चे दोनों को फॉलो कर चल रहे हैं। बापदादा दिल में *रोज़* अमृतवेले उन सिकीलधे बच्चों को, जो फॉलो करने वाले हैं उन्हों को विशेष यादप्यार देते हैं। *वाह! बच्चे वाह!* का वरदान देते हैं। ब्रह्मा बाप ने आज - विशेष बापदादा दोनों को फॉलो करने वाले बच्चों को सामने लाके विशेष यादप्यार दी है। तो ब्रह्मा बाप की याद स्वीकार की! ब्रहुत-बहुत दिल से प्यार दिया है। *प्यार माना फॉलो फादर का वरदान मिलना।*

➢ ब्रह्मा बाप ने कितना एक्यूरेट पार्ट बजाया। ऐसे ही फॉलो फादर। ब्रह्मा बाप ने भी तो सामना किया लेकिन पास हो गये। तो आप सबका भी यह दृढ़ संकल्प है कि अन्त तक पार्ट बजाते पार्ट में पास होना ही है? हुआ ही पड़ा है। हुआ पड़ा है कि होना है? *हुआ पड़ा है.. निश्चय है ना?* हमारी विजय पाने की मौसम है, (विजय) संगमयुग की विशेषता है। तो समय की विशेषता को यूज़ करते चलो। वरदान है संगमयुग को - बापदादा को फॉलो करने का। तो सभी वरदान यूज़ करते हैं? **(18-01-2014)**

➢ बापदादा अभी इस समय यही चाहते हैं कि और भी आत्माओं को यह अनुभव कराओ ''मेरा बाबा'' और वर्से का अधिकारी बनाओ। आज संसार में दु:ख-अशान्ति या अल्पकाल का सुख फैला हुआ है। उन आत्माओं को सदा के सुख-शान्ति का थोड़ा सा भी अनुभव जरूर कराओ क्योंकि इस समय ही अनुभव करा सकते हो। इस समय को वरदान है - आत्माओं को परमात्मा से मिलाने का। सारे कल्प में *आत्म–परमात्मा का मिलन, परिचय, सम्बन्ध, वर्सा* इस समय ही प्राप्त होता है। तो अब हर एक बच्चे को, जो अधिकारी हैं उन्हों को सदा उन आत्माओं के ऊपर तरस आना चाहिए कि कोई भी आत्मायें चाहे देश - चाहे विदेशी वंचित रह नहीं जायें।

➢ आपका विशेष कार्य यही है कि किसी भी प्रकार से कोई एरिया ऐसी नहीं रह जाये जो उल्हना दे - हमें परिचय ही नहीं मिला। सर्विस तो चारों ओर कर रहे हो लेकिन कोई भी आसपास की एरिया रह नहीं जाये। उल्हना नहीं मिले, *हमारा बाबा आया और हमको पता नहीं पड़ा।* यह जिम्मेवारी आप निमित्त बने हुए बच्चों की है। जहाँ तक हो सकता वहाँ सन्देश जरूर दे दो। नोट करो कौन सी एरिया रही हुई है! पता देना आपका कर्तव्य है, जाने नहीं जाने, वह जानें। तो हर एक अपनी एरिया के आसपास चेक करो - कोई भी एरिया सन्देश के बिना रह नहीं जाए। आप सोचेंगे बापदादा आज ऐसे क्यों कह रहे हैं? क्योंकि बापदादा ने देखा है कि कई बच्चों की नजदीक की एरिया जिनकी जिम्मेवारी है लेकिन *वह पूरी नहीं कर रहे हैं।* इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि कोई की भी एरिया रह गई हो, कारणे-अकारणे तो उसका *हल ढूंढो* सन्देश जरूर दो।

➢ आप सभी बाप के सिकीलधे बच्चे जो बाप के बन गये, वह कितने सिकीलधे हैं! बापदादा भी सिकीलधे बच्चों को देख खुश होते हैं, वाह! बच्चे वाह! पुरुषार्थ में थकना नहीं। *कोई भी छोटी-मोटी बात आती है-मदद लो।* किससे मदद नहीं लेनी है तो योगबल से चेक करके उसका कोई न कोई सहयोग ढूंढो।

- आज बापदादा सेवा का इशारा दे रहा है, सेवा के साथ और क्या इशारा है? *स्वयं को सम्पन्न बनाने का।* ऐसे नहीं कि सेवा में इतने बिजी हो जाओ तो स्वयं को देखने का समय नहीं मिले। स्वयं को भी देखो और समय को भी देखो। बाकी सभी खुशमिजाज़ रहते हो? अगर खुशमिजाज़ नहीं रहते तो जिसमें फेथ हो, भावना हो उससे सहयोग लो। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि छोटी-छोटी बातें किसी समय भी आ सकती हैं इसलिए *अपने को अलर्ट रखना अपना फर्ज है।* कोई कितना भी कहे लेकिन स्वयं, स्वयं को अलर्ट करना है।
- सन्तुष्टता का वायुमण्डल हर स्थान पर होना चाहिए। अगर असन्तुष्टता है तो किसी भी सहयोग से... क्योंकि होना है छोटा-छोटा हो या बड़ा हो लेकिन उसके लिए स्वयं को पावरफुल जरूर बनना है। आज बापदादा इसी पर इशारा दे रहे हैं कि - अचानक के लिए तैयार रहो। फिर ऐसे नहीं कहना यह तो पता ही नहीं था, होना है, होगा अचानक। *आप सबके मन से हल्का हो जायेगा तभी होगा।* इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं कि - अपने आपको चेक करो। बाप समान, जो बाप चाहता है, जानने में तो सब होशियार हैं; तो जो बाप चाहता है मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क इन सब बातों में ऐसी अवस्था है, जो कुछ भी अचानक हो तो सामना कर सकेंगे? *इन्टरनल पावर... आत्मा सदा अटेन्शन में रहे, सदा तीव्र पुरुषार्थी रहे।* स्व परिवर्तन और चारों ओर भी परिवर्तन में सहयोगी बनने में; दोनों बातों में चेक करना।
- होना है, तो अचानक होगा। उस समय पुरुषार्थ कर नहीं सकेंगे। अभी चेक करो - कुछ भी अचानक हो जाए, हलचल हो जाए तो इतनी शक्ति है जो *स्वयं को बचायें,* वायुमण्डल में यह प्रभाव डालें, *औरों के भी मददगार बनें।* यह चेक करना। समझा ना सभी ने! समझा? समझदार तो बहुत हो। नहीं .. बापदादा को अच्छा लगता है। ऐसे ही नहीं कहते हैं। समझदार तो हो लेकिन *कभी-कभी समय पर थोड़ा टाइम लगाते हैं।*
- कोई भी गलती रखना नहीं, अगर हो भी गई तो बापदादा से दिल में पश्चाताप करके उसको खत्म करना। जमा नहीं करो। बापदादा हर एक का खाता देखे तो कैसे खाता हो? *ओ.के., वेरी गुड।* ऐसे है?
- भले कुछ भी हो, 'बाबा'.. 'मेरा बाबा', यह दवाई है। **(31-01-2014)**
- हर बच्चे को अमृतवेले बापदादा विशेष चारों ओर यादप्यार और शक्तियां वरदान में देते हैं। ऐसे प्रभु पात्र बच्चों का भाग्य है।
- अब यह कमाल दिखाओ - हर बच्चा निर्विघ्न बन बाप समान बनें। लक्ष्य तो सबका है लेकिन बीच-बीच में कोई विघ्न थोड़ा ढ़ीला भी कर देती है। अब बाबा यही चाहते हैं कि - हर एक अपने को लक्ष्य रख करके निर्विघ्न.. मन्सा, चाहे वाचा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में निर्विघ्न। *सदा बाप समान बन औरों को भी उमंग-उत्साह में लाकर उनके सहयोगी बन उन्हों को भी निर्विघ्न बनावे।* हर एक अपने सेवा स्थान को निर्विघ्न बनाकर सभी की दुआयें ले। हर एक सेवाकेन्द्र या हर एक जहाँ भी है.. घर में है, चाहे सेन्टर पर है; यह दृढ़ संकल्प करे, और करके दिखावे कि - *मैं निर्विघ्न हूँ और साथियों को भी निर्विघ्न बनाने की सेवा करूंगा।* कम से कम हर सेन्टर को अपने-अपने साथियों के सहयोगी बन निर्विघ्न बनाने की सेवा में सफल बनें।
- जब आप विश्व परिवर्तक अपने को कहलाते हो तो *विश्व के परिवर्तन के पहले जहाँ भी हैं उस स्थान को तो निर्विघ्न बनायेंगे ना!* लक्ष्य रखो - जैसे अपने को निर्विघ्न बनाया है, संकल्प में सफलता है; वैसे साथियों को, वायुमण्डल को भी बनायेंगे; तब तो अपना राज्य आयेगा ना!
- अभी बापदादा हर मास रिजल्ट देखेंगे। कम से कम अपने नजदीक वाले साथियों को तो आप समान बनाना चाहिए ना! बना सकते हैं?
- प्यार में तो सब सहज हो जाता है। तो जैसे आप सभी ने हिम्मत रखी वैसे मदद भी बाप करेंगे, साथी भी मदद करेंगे तो प्रैक्टिकल में दिखाई देगा। परिवर्तन तो होना है ना! जो भी छोटी-मोटी बात है ना; *वह परिवर्तन आपेही कर लो।* कहना नहीं पड़े। समझदार तो हो.. क्या करना है, क्या नहीं करना है! *तो जो नहीं करना है वह नहीं कर लो.. बस।*
- तो अगले बार जब (आप) आयेंगे तो पूछेंगे। आपकी एरिया से विघ्न समाप्त हुए? पूछें? क्योंकि बनना तो आप लोगों को ही है, बनके बनाना है। राजधानी स्थापन होगी तो यहाँ से ही संस्कार डालेंगे ना! होगा? कोई बात नहीं है, *बापदादा भी मददगार बनेंगे।* **(14-02-2014)**

- हर एक अपने दिल के चार्ट को देखना कि - अपने राज्य में जाने के लिए अपने में सम्पूर्णता कितनी लाई है? क्योंकि सम्पूर्ण राज्य में जाना है, जहाँ दु:ख का नामनिशान नहीं। तो अभी से अपनी दिल में सदा निर्विघ्न रहने का संस्कार देखते हो? विघ्न आने के पहले ही निर्विघ्न अवस्था की अनुभूति होती है? अभी बापदादा बच्चों में विघ्न-विनाशक की विशेषता देख भी रहे हैं और देखने चाहते भी हैं। बाप का निर्विघ्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार कोई-कोई बच्चों का है; अटेन्शन है, लेकिन अटेन्शन का अर्थ है नो टेन्शन। इस बात के ऊपर अच्छा ध्यान है, क्योंकि *अभी आप निमित्त बने हुए बच्चे निर्विघ्न अवस्था के अनुभवी बनेंगे तभी आपके निर्विघ्नता का वायब्रेशन पुरुषार्थी बच्चों को पहुंचेगा।*
- बाप यही चाहते हैं कि - हर बच्चा अभी अपने पुरुषार्थ अनुसार अपने पास नोट करे, जो भी समय अपने अनुसार आप फिक्स करो, उतना समय निर्विघ्न रहे क्योंकि आगे चलकर *निर्विघ्न का अटेन्शन रखना आवश्यक है।* इसलिए बापदादा चाहते हैं सारे विश्व के चारों ओर के बच्चे अब अपने हिम्मत के प्रमाण फिक्स करे कि - इतना समय मैं आत्मा निर्विघ्न रह सकती हूँ और अटेन्शन से रहके देखें।
- अभी संकल्प के ऊपर अटेन्शन की आवश्यकता है। तो चेक करना *हर एक संकल्प में भी निर्विघ्न रहे?* व्यर्थ संकल्प भी नहीं। क्या अपने संकल्प शक्ति पर इतना अटेन्शन है? संकल्प अपनी शक्ति है ना! तो निर्विघ्न रहने का प्लैन सोचो। चेक करो - *जो सोचा वह हुआ?* क्योंकि माया भी सुन रही है। कितनी भी वातावरण की माया हो, लेकिन वातावरण का प्रभाव मन के शुभ संकल्प में विघ्न रूप नहीं बने, इसमें सफलता हो।
- *वेस्ट थॉट्स जो आवश्यक नहीं है वह भी टाइम ले लेते हैं।* वह समय बचाना है। हो सकता है? हो सकता है? उमंग-उत्साह वाले तो बहुत हो - इसकी शाबास। अभी उमंग-उत्साह को कर्म तक लाओ। इसमें भी पास हो जायेंगे क्योंकि बाप को साथ रखेंगे ना! तो *बाप का साथ होने से आटोमेटिकली व्यर्थ समाप्त हो जायेगा।*
- बापदादा यही सौगात चाहते हैं कि - व्यर्थ को समाप्त करो। अटेन्शन दो। *बुराई के ऊपर तो अटेन्शन है लेकिन व्यर्थ के ऊपर भी अटेन्शन देना है,* क्योंकि व्यर्थ में समय बहुत वेस्ट जाता है। तो आज के दिन शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने का *होमवर्क* बापदादा दे रहा है। पसन्द है ना! पसन्द है?
- जितना बढ़ा सको सेवा उतनी बढ़ाते जाओ क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता है, इसलिए सेवा को बढ़ाते जाओ। क्योंकि अपना राज्य आना है ना! तो अपने राज्य में तो राज्य करेंगे ना! जितना हो सके उतना आत्माओं को बाप का परिचय तो दे दो। *बाप आया और चला जाए.. और बच्चों को पता ही नहीं पड़े..* तो जितना हो सके उतना सन्देश जरूर दो। फिर पश्चाताप तो करेंगे कि बाप आया हमको सुनाया भी गया, लेकिन हम नहीं चले। आप अपना सन्देश देने का काम बढ़ाते चलो। कोई उल्हना नहीं दे हम तो पास में रहता था, हम तो एक गली में रहते थे.. तो भी हमको पता नहीं पड़ा। जहाँ तक हो सके सन्देश तो मिले कि - हमारा बाप आया। चले नहीं चले..वह उन्हों के ऊपर है, लेकिन आपकी तरफ से परिचय तो मिले; *फिर पश्चाताप करेंगे* लेकिन मालूम तो पड़े ना! **(27-02-2014)**
- आज के दिन हर एक बच्चा अपने होली बनने की, होली बनाने की स्थिति को जानते हैं। बाप भी एक-एक बच्चे को कहाँ तक मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में होली बने हो, पवित्र बने हो, वह बाप भी जानते.. आप भी जानते हो; क्योंकि बापदादा को होलिएस्ट बच्चे बहुत प्यारे हैं। तो आज हर एक बच्चा होलिएस्ट बनने की मुबारक स्वीकार करे। हर बच्चे को दिल की दुआओं के साथ, दिल के प्यार के साथ मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।
- जैसे दिन का नाम है होली, ऐसे जीवन के हर दिन होली बन अर्थात् पवित्र बन पवित्रता के वायब्रेशन चारों ओर फैलाते रहो।
- हर बच्चा हर सब्जेक्ट में आगे बढ़ते चलो, बापदादा हर बच्चे के साथी हैं।
- आज के दिन से रोज़ *अमृतवेले* अपने *पुरुषार्थ प्रमाण बाप की दुआयें स्वीकार करना।* बाप की दुआयें क्या हैं? बापदादा हर बच्चे को तीव्र पुरुषार्थी स्वरूप में देखने चाहते हैं। कोई भी बात आयें, *बातों का काम है आना* लेकिन *आप बच्चों का काम है बाप के दिल की दुआयें लेना।*
- रोज़ अमृतवेले अपने को बाप की दुआयें स्वीकार करना। सारा दिन ऐसे अनुभव करो कि बापदादा हमारे रक्षक बन साथ में है.. और बाप के साथ का अर्थ क्या है? बाप जो कहे, अमृतवेले जो मुरली सुनते हो उसमें याद प्यार के साथ दुआयें हैं ही। तो रोज़ दुआयें लेते उड़ते चलो और उड़ाते चलो।
- *होली मनाना अर्थात् बीती को और वर्तमान को सदा सफलता स्वरूप बनाना।* सफलता स्वरूप है, सफलता हमारे जन्म का वरदान है, उस स्मृति से दिन को बार-बार *याद* करो। बापदादा का वरदान है - सफलता हर बच्चे के साथ है..क्योंकि

बापदादा साथ है तो सफलता सदा एक-एक बच्चे के साथ है, सिर्फ उसको प्रैक्टिकल में लाना है। है ही सफलता स्वरूप, स्वरूप ही सफलता है। तो आज के दिन (का) यही वरदान स्मृति में रखना कि सफलता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। *यह स्मृति असफलता की बात को भी सफल बना देगी।* सदा सफलता स्वरूप हूँ, यह आज के दिन का बापदादा का वरदान *सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है,* यह सदा स्मृति में रखना।

- होली अर्थात् बीती सो बीती। होली अर्थात् बीती। तो जो भी कुछ किया उसको आज बीती सो बीती कर आगे के लिए सफलता मेरा जन्म अधिकार है, अमृतवेले रोज़ इस वरदान को स्मृति में रख सारा दिन चेक करना और सफलता स्वरूप बनना। तो अमृतवेले का (वरदान) सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है, इसको रोज़ स्मृति में रखना और प्रैक्टिकल में अगर कोई भी बात आवे तो सफलता के वरदान को याद करना और प्रैक्टिकल में लाना। **(15-3-2014)**
- बापदादा हर बच्चे के दिल का प्यार देखकर हर एक बच्चे के प्रति दिल की दुआयें देते हैं - *बच्चे सदा दिल के दिलवर द्वारा दिल का प्यार लेते हुए आगे बढ़ते चलो।* अभी बापदादा हर एक बच्चे को महावीर बन चलने की दुआयें दे रहे हैं। कभी भी थकना नहीं, घबराना नहीं। *बाप को हर बच्चा अति प्यारा है।* यह प्यार ही आगे बढ़ा रहा है और आगे बढ़ाता रहेगा। सभी प्यार की पालना से आगे बढ़ रहे हैं या कोई बीच में विघ्न आता है तो रूकते तो नहीं हैं?
- बापदादा आप बच्चों को देखकर एक बात में बहुत खुश होते, वह कौन सी बात? चाहे बातें कितनी भी आयें लेकिन *निर्भय बन मैजारिटी आगे बढ़ रहे हैं।* बापदादा बच्चों का लक्ष्य और लक्षण देख खुश है इसलिए कभी भी किसी भी वायुमण्डल को देख उसके प्रभाव में न आकर बाप के स्नेह और सहयोग से काफी आगे बढ़ भी रहे हैं और बढ़ते रहना। *एक दो को देख उनकी विशेषता को देखो, दूसरी बातों को नहीं देखो।* एक दो की कमजोरी की बातें सुनते भी जैसे नहीं सुनो। *खुद को भी आगे बढ़ाओ और साथियों को भी आगे बढ़ाते चलो।*
- *बापदादा ऐसे बच्चे भी देख रहे हैं अच्छा पुरुषार्थ कर रहे हैं..* लेकिन तीव्र पुरुषार्थ की लहर सदा अपने में लाते हुए औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी की लहर में लाओ। *उमंग-उत्साह में लाओ, सहयोगी बनो।* पुरुषार्थहीन के वायुमण्डल में नहीं आकर उन्हों को भी उमंग उत्साह में लाओ। बीच-बीच में किसी-किसी आत्मा को पुरुषार्थ में थकावट अनुभव होती है बापदादा देखते हैं.. लेकिन स्वयं पुरुषार्थ में तीव्र रहने वाले औरों को भी पुरुषार्थ में आगे बढ़ाओ। वायुमण्डल दिनचर्या का ऐसे बनाओ जो सभी पुरुषार्थ के उमंग-उत्साह से बढ़ते भी चलें, बढ़ाते भी चलें। क्योंकि एक दो के साथी हो ना! तो सबके प्रति शुभ भावना के आधार से बढ़ते चलो। उमंग-उल्हास अपने अनुभव का सुनाते हुए एक दो के सहयोगी बनो। बापदादा ने देखा मैजारिटी पुरुषार्थ की लहर में ठीक चल रहे हैं लेकिन पुरुषार्थ में *ढीले साथी* होने के कारण थोड़ा-थोड़ा असर पड़ जाता है, वह अटेन्शन दो।
- वायुमण्डल क्या भी बनें लेकिन आप अपने वायुमण्डल से वायुमण्डल को परिवर्तन करो। *वायुमण्डल में आओ नहीं,* आगे बढ़ो और आगे बढ़ाते चलो। एक दो के साथी हैं ना! तो सदा देना अर्थात् आगे बढ़ाना। तो आगे बढ़ते चलो। अब हर एक बच्चा किस लक्ष्य में है? तीव्र पुरुषार्थी। ढीला पुरुषार्थी नहीं। ठीक हो जायेगा..ठीक हो जायेगा यह नहीं सोचो। ठीक होना ही है *क्योंकि बाप से प्यार है ना।* बाप से प्यार है तो बाप को किससे प्यार है? तीव्र पुरुषार्थी बच्चों से। तो आप क्या बनेंगे? तीव्र पुरुषार्थी। जो समझते हैं तीव्र पुरुषार्थी बन औरों के भी सहयोगी बनेंगे, वह हाथ उठाओ। बापदादा खुश हैं। हिम्मत तो रखी ना! तो हिम्मते बच्चे मददे खुदा। जरूर मदद मिलेगी। *सिर्फ इच्छा रखो बस बनना ही है, करना ही है,* पुरुषार्थहीन नहीं, पुरुषार्थ। बापदादा खुश होते हैं। कोई-कोई बच्चा अभी भी देखते हैं पुरुषार्थ में बातें आते थोड़ा कमजोर बन जाते लेकिन नहीं, *बहादुर बनो, बहादुर बनाओ।* रोज़ अमृतवेले चेक करो कि मेरे पुरुषार्थ की गति तीव्र है या चल रहे हैं; पहुंच ही जायेंगे, हो ही जायेगा, ऐसे संकल्प तो नहीं रखते? तीव्र पुरुषार्थी बनो। पुरुषार्थी तो हैं लेकिन चेक करो तीव्र पुरुषार्थी हैं? बापदादा को प्रिय कौन लगते हैं? तीव्र पुरुषार्थी। तो हर एक बच्चे को क्या बनना है? तीव्र पुरुषार्थी बनना है।

(30-3-2014)

---------- औम् शान्ति ----------